टिप्पणियाँ

2

ऋक्संहिता साहित्य

मन्त्र और ब्राह्मण के भेद से वेद के दो भेद हैं। मन्त्र भाग ही संहिता शब्द से प्रयोग किया जाता है। इस अध्याय में हम ऋग्वेद संहिता के विषय में जानेंगे। संहिता ही मन्त्र का पर्यायवाची शब्द है। ऋग्वेद मन्त्रों के विषय में यहाँ संक्षेप में आलोचना की जायेगी और संहिता में अष्टक क्रम और मण्डल क्रम देखते हैं। उसी का यहाँ संक्षेप में आलोचना की जायेगी। शाखाओं के ज्ञान के बिना संहिता पाठ निरर्थक ही है, इसलिए कुछ शाखाओं के विषय में ज्ञान अति आवश्यक है। कुछ सूक्तों को भी पहले जान लेना चाहिए। सूक्त और संवाद-लौकिक-दार्शनिक की तरह होता है, उस की यहाँ आलोचना की गई है। ऋग्वेद में एक विशिष्ट मण्डल है, वह दसवाँ मण्डल है, जहाँ भाषा में, छन्द में पूर्व-पूर्व मण्डलों की अपेक्षा भेद देखते हैं, उसी की यहाँ संक्षेप में कुछ आलोचना की जायेगी।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे :

- ऋग्वेद के विभागों का परिचय प्राप्त कर पाने में;
- अष्टक मण्डल क्रमों को जान पाने में;
- ऋचा के विविध शाखाओं का परिचय प्राप्त कर पाने में;
- दसवें मण्डल की विशेषता समझ पाने में;

2.1 ऋक्संहिता

जिन ऋचाओं से स्तुति की जाती है वह है ऋक्। उस प्रकार की ऋचाओं का समूह ही ऋग्वेद है। जहाँ अर्थवश से पाद व्यवस्था की वह है ऋक्, इस प्रकार मीमांसक कहते है। चारों वेदों

में ऋग्वेद की महानता का वर्णन सबसे अधिक है। ऋग्वेद ही धर्म संबंधी स्तोत्रों का समुद्र के समान महासागर है। ऋचाओं में बहुत से ऋषियों के द्वारा अनेक मधुर शब्दों से अनेक देवो की आदर से और भक्ति से स्तुति की गई है। भाषा का वैसे भाव अन्य वेदों से पृथक होने से यह ऋग्वेद प्राचीनतम माना गया, ऐसा पाश्चात्य विद्वान मानते हैं। भारतीयों के द्वारा भी ऋग्वेद का अत्यधिक आदर किया जाता है। तैत्तिरीय संहिता के अनुसार यज्ञों के लिये जो विधान है, वहाँ उस प्रकार की दृढ़ता नहीं दिखाई देती है। परन्तु ऋग्वेद के द्वारा विधीयमान अनुष्ठान तो दृढ़ ही होता है। जैसे –

''यद्वै यज्ञस्य साम्ना यजुषा क्रियते शिथिलं तत्, यदृचा तत् दृढ़मिति''। (तै.सं. ६/५/१०/३)

परमेश्वर से सर्व प्रथम ऋचाओं का ही आविर्भाव हुआ है ऐसा वेद के पुरुष सूक्त में भी वर्णन किया गया है। जैसे –

''तस्माद् यज्ञात् सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसि यज्ञिरे तस्माद् यजुस्तस्मादजायत।। इति।।''

2.2 ऋग्वेद का विभाग

यद्यपि महाभाष्य में ऋग्वेद की इक्कीस शाखाओं का निर्देश है, और वहाँ शाकल-वाष्कल-आश्वलायन-शांख्यायन-माण्डूकायन-नाम की पांच मुख्य शाखाओं के विषय में कहा गया है। वह ऋग्वेद सूक्त-मण्डल भेद से दो भागों में विभक्त है। वहाँ सूक्त के चार भेद किये, ऋषि सूक्त, देवता सूक्त, छन्द सूक्त, अर्थ सूक्त। जिन मन्त्रों के ऋषि एक ही हैं, उस समूह को ऋषि सूक्त कहते हैं। जिन मन्त्रों में देवता एक है, उस समूह को देवता सूक्त कहते है। समान छंद के मंत्र समूह को छंद सूक्त और जितना अर्थ समाप्त मन्त्रों के समूह को अर्थ सूक्त कहते है। अच्छे कहने से सभी को सूक्त इस नाम से कहते है। वह ऋग्वेद मण्डल-अनुवाक-वर्ग भेद से अष्टक-अध्याय और सूक्त भेद से दो प्रकार का है।

उपर्युक्त दोनों भाग के प्रथम भाग में ही बालखिल्य सूक्तों को छोडकर सम्पूर्ण यह ऋग्वेद संहिता में दस मण्डल, पचासी अनुवाक, दो हजार छः वर्ग हैं। और द्वितीय भाग में आठ अष्टक, चौसठ अध्याय और एक हजार सत्रह सूक्त हैं।

पाठगत प्रश्न 2.1

1. ऋक् क्या है?
2. ऋग्वेद क्या है?
3. मीमांसको के लिये ऋक् क्या है?
4. ऋचा के आविर्भाव के विषय में कहाँ आलोचना की है?

टिप्पणियाँ

5. महाभाष्य में ऋग्वेद की कितनी शाखाओं का निर्देश है?
6. ऋग्वेद के दो भाग कौन से है?
7. सूक्त कितने प्रकार के हैं, और वे कौन कौन से है?
8. ऋषि सूक्त क्या है?
9. छन्द सूक्त क्या है?
10. अर्थ सूक्त क्या है?
11. ऋग्वेद कितने प्रकार का है, और वे कौन-कौन से है?
12. ऋग्वेद के प्रथम भाग में क्या है?

2.3 क्रम विभाजन

ऋग्वेद के दो विभाग किये हैं, एक अष्टक क्रम है और दूसरा मण्डल क्रम है। इन क्रमों की यहाँ संक्षेप से आलोचना दी गई है।

2.3.1 अष्टक क्रम

सम्पूर्ण ऋग्वेद संहिता आठ भागो में विभक्त है। और आठ भागो में प्रत्येक भाग में आठ अध्याय है। इसलिए सम्पूर्ण ऋग्वेद में चौसठ अध्याय हैं। प्रत्येक अध्याय के अनन्तर विभाग का नाम 'वर्ग' है। अच्छी प्रकार से और सरलता से जैसे अध्ययन हो, उसी प्रकार का यहाँ पर वर्ग भेद किया गया है। वर्ग तो ऋचा के समुदाय की संज्ञा है। वास्तविकता से वर्गो में ऋचाओं की संख्या निश्चित नहीं है। लगभग पांच मंत्रो का एक वर्ग होता है। सम्पूर्ण ऋग्वेद में दो हजार छः वर्ग हैं।

पाठगत प्रश्न 2.2

1. ऋग्वेद संहिता के कितने भाग है और प्रत्येक भाग में कितने अध्याय है?
2. सम्पूर्ण ऋग्वेद में कितने अध्याय है?
3. प्रत्येक अध्याय के अन्दर विभाग का क्या नाम है?
4. वर्ग भेद किस लिये किये गये हैं?
5. सम्पूर्ण ऋग्वेद में कितने वर्ग हैं?

2.3.2 मण्डल क्रम

ऋग्वेद का द्वितीय क्रम मण्डल क्रम है। यह ऐतिहासिक दृष्टि से और वैज्ञानिक दृष्टि से अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। बालखिल्य सूक्तों को छोड़कर सम्पूर्ण ऋग्वेद संहिता में दस मण्डल, पचासी अनुवाक

टिप्पणियाँ

हैं, और दो हजार छः वर्ग हैं। और यहाँ पर अनुवाको में सूक्त है, और सूक्तों में मन्त्रों को परिश्रम पूर्वक निर्धारित किया गया है। हमारे प्राचीन ऋषियों ने वेदों की शुद्धि के लिये उनमें प्रयुक्त अक्षरों की भी गणना की गई है। सभी मंत्रों की संख्या दस हजार चार सौ सडसठ (१०४६७) है ऐसा शाकल्य ऋषि मानते हैं, शौनक अनुक्रमणि में तो दस हजार पांच सौ अस्सी (१०५८०) मन्त्र बताये गये हैं। यहाँ भेद में खिल भेद से अथवा काल भेद से मन्त्रों में वृद्धि लोप हेतु का कारण है। शब्द संख्या– १५३८२६, अक्षर संख्या– ४३२०००। सभी मन्त्र चौदह छन्दों में विभक्त हैं ऐसा जानना चाहिए। ऋग्वेद में आये मन्त्रों के द्रष्टा ऋषि गृत्समद–विश्वामित्र–वामदेव–अत्रि–भरद्वाज–वशिष्ठ आदि हैं। मण्डलों के अनुसार सूक्तों की व्यवस्था (१९१+४३+६२+५८+८७+१०४+९२+११४+१९१) इस प्रकार है। इन सूक्तों के अतिरिक्त और ग्यारह सूक्त बालखिल्य नाम के हैं।

इनमे 'बालखिल्य'–सूक्तों का स्थान तो आठवें मण्डल के अन्तर्गत ही स्वीकार कर सकते हैं। इस मण्डल में प्रमुख सूक्तों की संख्या बयानवे (92) है। खिल सूक्तों के सङ्कलन करने पर उनकी संख्या एक सौ तीन हो जाती है। खिल शब्द का अर्थ होता है, 'परिशिष्ट' अथवा बाद में संङ्कलित मन्त्र। अपने लिये ही जब अध्ययन करते हैं, उसी समय ही खिल सूक्त पढ़ने की व्यवस्था है। परन्तु ये खिल मन्त्र कहीं पर भी प्राप्त नहीं होते हैं और अक्षर गणना में भी इन मन्त्रों का समावेश नहीं होता है। इनके यथार्थ रूप का भी ज्ञान नहीं है। इनका ऋग्वेद में स्थान आठवे मण्डल के उन्चासवें सूक्त से आरम्भ करके उनसठ सूक्त पर्यन्त है। इन मन्त्रों की संख्या अस्सी है। और अनुवाक–अनुक्रम के अनुसार इन मन्त्रों की संख्या दस हजार पांच सौ अस्सी है –

'ऋचां दशसहस्राणि ऋचां पञ्चशतानि च।
ऋचामशीतिः पादश्च पारणं सम्प्रकीर्त्तितम्'॥४३॥

(अनुवाक अनुक्रमणी में)

ऋचाओं में शब्दो की संख्या १५३८२३ है। जैसे –

'शाकल्यदृष्टेः पदलक्षमेकं सार्धं च वेदे त्रिसहस्रयुक्तम्।
शतानि चाष्टौ दशतद्वयं च पदानि षट् चेति हि चर्चितानि॥' (अनु. ४५)

और शब्द में आये अक्षरो की संख्या ४३२००० है। जैसे –

'उसने ऋचाओं की रचना की। बारह हजार बृहती छंद में। इस प्रकार की ऋचाओं की प्रजापति ने रचना की' (शत.ब्रा. १०/४/२/२/२३)।

'बृहती छन्द छत्तीस अक्षरों का होता है। इसी कारण १२०००'३६=४३२००० होते है। चार लाख बत्तीस हजार अक्षर है' (अनु. अन्तिम भाग में)।

ऋग्वेद के शब्द अक्षर आदि की गणना प्रसङ्ग में यहाँ वहाँ भिन्नता भी देखी जा सकती है। मालावरीय नारायण भट्ट द्वारा रचित सूक्त श्लोक प्राप्त होते हैं। इस ग्रन्थ में ऋग्वेद के वर्गो और सूक्तों की संख्या निर्धारित की गई है। वर्ग सूक्त आदि की गणना प्रतिपादक श्लोक और उसका विवरण निम्न रूप से है –

जानन्नपि द्विषामोदं स यज्ञः पातनानरः।
रसं भिन्नाय मांसादो नरस्तस्य जलाधिपः॥

नारायण भट्ट द्वारा दिया हुआ ऋग्वेद का विवरण –

अष्टक	८
मण्डल	१०
अध्याय	६४
अनुवाक	८५
सूक्त	१०१७
वर्ग	२००६
ऋचा	१०४७२
आदि ऋचा	२०८७५
शब्द	१५३८१६
अक्षर	३९४२२१

उपरि निर्दिष्ट संख्या में बालखिल्य सूक्तों की गणना नहीं है, यदि उन ११ सूक्तों की, ८० ऋचा, १८ वर्ग, ३०४४ अक्षर भी सङ्कलित हों तब सूक्तों की संख्या १०२८, वर्ग २०२४, ऋचा १०५५२ तथा अक्षर ३, ९७, २६५ होने चाहिए।

पाठगत प्रश्न 2.3

1. ऋग्वेद का कौन सा विभाग मण्डल क्रम है?
2. बालखिल्य सूक्तों को छोडकर सम्पूर्ण ऋग्वेद संहिता में कितने मण्डल, अनुवाक और वर्ग हैं?
3. शाकल्य के अनुसार कितने मन्त्र है?
4. ऋक् मंत्रो में अक्षरो की संख्या है?
5. सभी मन्त्र कितने छन्दों में विभक्त है?
6. ऋग्वेद के द्रष्टा ऋषि कौन है?
7. खिल शब्द का क्या अर्थ है?
8. ऋचाओं में कितने शब्द है?
9. बृहती छन्द में कितने अक्षर होते है?

2.4 ऋचाओं की संख्या

ऋग्वेद में ऋक् मन्त्रों की गणना भी एक कठिन समस्या है। इस गणना का समाधान प्राचीन और अर्वाचीन विद्वानों ने किया है। प्राचीन आचार्यो के मध्य में ऋग मन्त्रों के गणना प्रसङ्ग में जो विरोध दिखाई देता है, वह वास्तविक शाखा भेद जन्य ही है। परन्तु अर्वाचीन के मध्य में मन्त्र गणना प्रसङ्ग में जो विरोध है, वह केवल भ्रमजनित ही है। इस भ्रम का कारण है – ऋग्वेद में कितनी ऋचा हैं, इस प्रकार की है, जो अध्ययन काल में चार पाद होते हैं, किन्तु प्रयोग काल में दो पाद ही मानते हैं। ऋक् सर्वानुक्रमणि में इसका उल्लेख प्राप्त होते हैं – 'द्विर्द्विपदास्त्वृचः समामनन्ति' इस सूत्र की व्याख्या में षड्गुरु शिष्य का स्पष्ट कथन है – 'ऋचा के अध्ययन में तो पाठक दो-दो पाद में एक-एक ऋचा करके वेदपाठी अध्ययन करते हैं। वेद वचनो से संशय नहीं होते है। उसने पशुओं को वायु को (ऋ. १/६५) इति दस ऋचा में उल्लेख है। इससे अध्ययन में सरलता होती है।'

सायण भाष्य में भी इसका उल्लेख प्राप्त होता है। चरणव्यूह के टीका कर्ता महिमदास ने भी पहले कथन को समर्थित किया है। इस प्रकार की ऋचा प्राकृतिक दो पाद वाली कहलाती है। ऋग्वेद में भी दो पाद वाली ऋचा है। वे गिनती में सत्रह ही हैं। ये दो पाद वाली कभी भी अपने स्वरूप से अलग नहीं होती है। इस दो पाद वाली ऋचा का वास्तविक स्वरूप के परिचय नहीं होने से मैक्समूलर-मैक्डोनल आदि के अंग्रेजी में वेदज्ञान की गिनती से भ्रान्ति हुई है।

ऋग्वेद की संहिता में तीन छन्दों की अधिकता विद्यमान है। जिनमे 'त्रिष्टुप्'-छन्द की संख्या सबसे अधिक है। इस छन्द में चार पाद होते हैं। प्रत्येक पाद में ग्यारह अक्षर होते है। इस संहिता में ४२५१ त्रिष्टुप् छंद में है। उसके बाद गायत्री छन्द का स्थान आता है। इस छन्द में तीन पाद होते हैं। प्रत्येक पाद में आठ अक्षर होते हैं। इस छन्द की सम्पूर्ण संख्या २४४९ है। उसके बाद जगती छन्द का स्थान होता है। इस छन्द में चार पाद हैं। प्रत्येक पाद में बारह अक्षर हैं। इस छन्द की यहाँ पर संख्या १,३४६ है। शेषभाग में अनुष्टुप् ८९८, पङ्क्ति ४९८, उष्णिक् ६९८, बृहती ३७१ हैं।

पाठगत प्रश्न 2.4

1. प्राचीन आचार्यो के मध्य में ऋग मन्त्रों की गणना प्रसङ्ग में विरोध किसलिए दिखाई देता है?
2. अर्वाचीन के भ्रम का कारण क्या है?
3. चरणव्यूह के टीका कर्ता कौन है?
4. ऋग्वेद की संहिता में किस छन्द की अधिकता दिखाई देती है?
5. त्रिष्टुप्-छन्द में कितने पाद और कितने अक्षर होते है?
6. गायत्री-छन्द में कितने पाद तथा प्रत्येक पाद में कितने अक्षर होते है?

7. जगती-छन्द में कितने पाद और कितने अक्षर होते है?
8. ऋग्वेद के शेषभाग में कितने अनुष्टुप् छन्द है?

2.5 ऋग्वेद की शाखा का परिचय

यज्ञ की आवश्यकता को अनुभव करके उदात्त द्रष्टा महामुनि व्यास ने अपने चार शिष्यो को वेद पढ़ाया। यज्ञ में चार ऋत्विज होते हैं - १. होता, २. अध्वर्यु, ३. उद्‌गाता, ४ ब्रह्मा। होता- आह्वान कर्त्ता है, वह ही यज्ञ अवसर पर देवताओ की प्रशंसा के लिये लिखे मन्त्रों का उच्चारण करके देवताओ को बुलाते हैं, उस कार्य के लिये सङ्कलित मन्त्र स्तुति रूप में वर्णित है, उनका सङ्ग्रह ही ऋग्वेद है। इस प्रकार उद्देश्य को लक्षित करके व्यास ने पैल को ऋग्वेद पढ़ाया। अध्वर्यु विधिवत यज्ञ को पूर्ण करता है, वहाँ आवश्यक मन्त्र यजूंषी कहलाते हैं, उस का संग्रह यजुर्वेद, उद्‌गाता तो उच्च स्वर से गान करने वाला है, वह ही स्वर बद्ध मन्त्रों को उच्च स्वर से गाता है, उसके अपेक्षित मन्त्रों का सङ्ग्रह सामवेद है। महर्षि व्यास कवि ने जैमिनि को सामवेद पढ़ाया। ब्रह्मा यज्ञ निरीक्षक करने और नहीं करने का अन्वेषण करने वाला है, वह ही सभी प्रकार के मन्त्रों को जानने वाला है, उस के अपेक्षित मन्त्रराशि अथर्ववेद है ऐसा कहते हैं। यज्ञ निरीक्षण कार्य सम्पादन के लिये मुनि व्यास ने सुमन्तु मुनि को अथर्ववेद पढ़ाया -

'तदृक्वेदधरः पैलः सामगौ जैमिनिः कविः।
वैशम्पायन एवैको निष्णातो यजुषामत।
अथर्वाङ्गिरसनासीत् सुमन्तुर्दारुणो मुनिः॥' (नाग.पुरा. १/४/२१)

शाखा के साथ 'चरण'-शब्द का भी सम्बन्ध है। अब दोनों शब्दों का प्रयोग लगभग समान अर्थ में ही होता है। मालतीमाधव के टीका कर्ता जगद्धर के कथन अनुसार से - चरण शब्द शाखा विशेष अध्ययन-पर एकतापन्न जटा संघवाची है। इन शाखाओं का विस्तृत विवरण पुराणों में और चरणव्यूह में प्राप्त होता है। अलग अलग ग्रन्थों में शाखा संख्या में भी भिन्नता है। भाष्यकार पतञ्जलि ने कहा - 'चत्वार वेदाः साङ्गाः सरहस्या बहुधा भिन्नाः। एकशतमध्वर्युशाखाः। सहस्रवर्त्मा सामवेदः। एकविंशतिधा वाह् वृच्यम्। नवधाऽर्थवणो वेदः' (पस्पशाह्निकम्)।

यद्यपि महाभाष्य में ऋग्वेद की इक्कीस शाखा का निर्देश है, परन्तु शाकल-वाष्कल-आश्वलायन-शाङ्खायन-माण्डूकायन-नाम की पांच शाखा मुख्य हैं।

पाठगत प्रश्न 2.5

1. यज्ञ की आवश्यकता को अनुभव करके महामुनि व्यास ने क्या किया?
2. यज्ञ में ऋत्विज कितने होते है, और वे कौन कौन से है?
3. होता क्या करता है?
4. अध्वर्यु क्या करता है?

टिप्पणियाँ

5. उद्गाता क्या करता है?
6. जैमिनी को किसने सामवेद पढ़ाया?
7. ब्रह्मा का क्या कार्य है?
8. व्यास ने सुमन्त मुनि को अथर्ववेद किसलिए पढ़ाया?
9. शाखा के साथ किसका सम्बन्ध है?
10. मालतीमाधव के टीकाकर्ता कौन हैं?
11. महाभाष्य में कितनी शाखा का निर्देश है?

2.5.1 शाकल शाखा

आजकल ऋग्वेद की प्रचलित संहिता शाकल शाखा की है। शाकल संहिता के अन्त में ऋक्परिशिष्ट नाम के छत्तीस सूक्तों का संग्रह है। इन सूक्तों में कुछ विख्यात और बहुत चर्चा वाले सूक्त हैं। जैसे - श्री सूक्त (सू.स. ११), रात्रि सूक्त (सू.स. २६), मेधा सूक्त (सू.स. ३१), शिवसङ्कल्प सूक्त (सू.स. ३३)। इस सूक्त के प्रत्येक मन्त्र का चौथा चरण 'तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु' इस वाक्य से समाप्त होता है। वाष्कल शाखा के अनुसार 'संज्ञान सूक्त' ऋग्वेद का अन्तिम सूक्त है। ऋक्परिशिष्ट के मन्त्र पुराणों में वैदिक मन्त्र दृष्टि के रूप में उद्धृत है। श्री सूक्त के दो मन्त्र- 'हिरण्यवर्णां हरिणीम्' तथा 'गन्धद्वारां दुराधर्षाम्' पद्म पुराण में उद्धृत है (६/१५५/२८/३०) 'सितासिते सरीते यत्र सङ्गते' यह स्कन्द पुराण के काशी खण्ड में (७/४४) तथा पद्म पुराण में (६/२४६/३५), इसका उल्लेख प्राप्त होता है। दोनों स्थानो में यह मन्त्र प्रयाग परक है। प्रयाग में सिता=गङ्गा, तथा असिता=यमुना उनका सङ्गम तीर्थ की विपुल महिमा का प्रतिपादन करने वाला यह मन्त्र है। ऋक्परिशिष्ट के मन्त्र पुराणों में प्रमाण के लिये उद्धृत है, उसके कारण ये मन्त्र विशेष सम्मान वाले हैं।

2.5.2 वाष्कल शाखा

यद्यपि आजकल वाष्कल शाखा की संहिता प्राप्त नहीं होती है, फिर भी इसकी विशिष्टता का वर्णन विविध स्थलो में प्राप्त होता है। शाकल शाखा के अनुसार ऋग्वेद का अन्तिम मन्त्र 'समानी व आकूतिः' (१०/१९१/४) है, किन्तु वाष्कल संहिता के अनुसार 'तच्छ्रेयोरावृणीमहे' यह अन्तिम मन्त्र है। इस सूक्त से ही वाष्कल शाखा-संहिता की समाप्ति होती है। मन्त्रों की संख्या भी कही पर अधिक है। शाकल शाखा में एक हजार सत्रह (१०१७) सूक्त हैं। किन्तु वाष्कल शाखा में एक हजार पच्चीस (१०२५) सूक्त हैं। इन आठ से अधिक सूक्तों में एक तो संज्ञान सूक्त है। यह मन्त्र इस संहिता के अन्त में लिखा हुआ है। शेष सात सूक्त बाल्यखिल्य सूक्तों से सङ्गृहीत हैं। इसलिए इस मण्डल के समस्त सूक्तों की संख्या (९९) निन्यानवे होती है।

'एतत् सहस्रं दश सप्त चौवाष्टवतो बाष्कलकेऽधिकानि।
तान् पारेण शाकले शैशिरीये वदन्ति शिष्टानखिलेषु विप्रा॥'

(अनुवाकाक्रमणी, श्लो. ३६)

2.5.3 आश्वलायन शाखा

आश्वलायन संहिता का तथा उसके ब्राह्मणों का काल किसी समय में अवश्य ही था। क्योंकि कवीन्द्र आचार्य की (१७ शताब्दि में) ग्रन्थों की सूची में इस नाम का उल्लेख स्पष्ट रूप से उपलब्ध होता है। आजकल इस शाखा के गृह्यसूत्र और श्रौतसूत्र दो उपलब्ध होते हैं।

2.5.4 शाङ्ख्यायन शाखा

इस शाखा की संहिता तो उपलब्ध नहीं है। किन्तु ब्राह्मण और आरण्यक ग्रन्थ प्रकाशित हैं। बहुत से आलोचकों के विचार में शाङ्खायन तथा कौषीतकी शाखा एक ही है, किन्तु दोनों शाखा अलग ही है। शाङ्खायन संहिता के तथा शाकल शाखा के अनुयायियों में-ऋक्संहिता का और मन्त्र संहिता का भेद नहीं देखते, केवल मन्त्रों के क्रम में ही भिन्नता है।

2.5.5 माण्डूकायन शाखा

इस शाखा के भी ग्रन्थ उपलब्ध नहीं हैं। यहाँ वहाँ उदाहरण से ही इसके अस्तित्व का बोध होता है।

पाठगत प्रश्न 2.6

1. ऋग्वेद की दो शाखाएँ कौन कौन सी है?
2. आश्वलायन शाखा के प्रमाण कहाँ प्राप्त होते है?
3. श्रौतसूत्र किस शाखा में होते हैं?
4. शाकल शाखा के अनुसार ऋग्वेद का अन्तिम मन्त्र क्या है?
5. हिरण्यवर्णा हरिणीम् इत्यादि मन्त्र किस सूक्त में है?

2.6 दान स्तुति

ऋग्वेद के सूक्तों में 'दानस्तुति' नाम के कुछ मन्त्र प्राप्त होते हैं। कात्यायन की ऋक्सर्वानुक्रमणि में केवल बाईस सूक्तों में दान स्तुति का उल्लेख है। किन्तु आधुनिक शोधकों के अनुसार अड़सठ सूक्तों में दान स्तुति का वर्णन है। ग्रन्थ में मणिलाल का निबन्ध देखने योग्य है। ऋग्वेद के ८/३/२१-२४ मन्त्र का देवता सर्वानुक्रमणि में पाकस्थ कौरायाण की दानस्तुति कही है। किन्तु निघण्टु-निरुक्त आदि-ग्रन्थों के अनुशीलन से जाना जाता है कि कौरायाण पद का यास्क के द्वारा किया अर्थ बनाये हुए यान होता है। दुर्गाचार्य के मत में इस मन्त्र में 'यान' की स्तुति है, दान की नहीं। शौनक मत में पाकस्थामा शब्द का भी अर्थ व्यक्ति वाचक नहीं है, अपितु विशेषण पद है (बृहद्देवता ६/४५)। स्कन्द माहेश्वर की व्याख्या के अनुसार पाकस्थामा शब्द का अर्थ होता है - महाप्राण अथवा महाबलवान - 'पाकस्थामा लोक में स्थाम शब्द प्राण में प्रसिद्ध है। पाक

परिपक्व में जो महान्, अथवा जिसमें निष्णात है वह पाकस्थामा महाप्राण अर्थ में' (स्कन्दमाहेश्वर की व्याख्या)।

जैमिनि सूक्त-गुणवाद का (मी. सू १/२/१०) शबरभाष्य भारतीय सिद्धान्त की चाभी है। उसका स्पष्ट कथन है, की ये सम्पूर्ण आख्यान असत्य है। आख्यानों में दो बाते हैं - वृतान्तज्ञान तथा प्ररोचना। वृतान्तज्ञान विधि न तो प्रवर्त्तक और न निवर्त्तक है। फल स्वरूप प्रयोजन अभाव से अपेक्षित नहीं है। प्रीति के कार्यों में प्रवृत्ति होती है, द्वेष से निवृत्ति होती है। आख्यानों में इसी प्रकार के अंश की विवक्षा है। जैसे -

हमारा वृत्तान्त स्तुति अर्थ के द्वारा अन्वाख्यान है। ... वहाँ वृत्तान्त अन्वाख्यान न प्रवर्तक और न निवर्तक है, प्रयोजन के अभाव से। अनर्थक विवक्षित है, परन्तु प्ररोचना से तो प्रवृति और द्वेष से निवृति होने से उसकी विवक्षा है।

सामान्य दानस्तुति प्रतिपादक एक भव्य सूक्त है। इस सूक्त में दान-महिमा का सुन्दर वर्णन है। जो व्यक्ति अपने धन को अपने लिये लगाता है वह पाप को ही खाता है -

'मोघमन्नं विन्दते अप्रचेताः सत्यं ब्रवीमि वध इत् स तस्य।
नार्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाघो भवति केवलादी॥'

(तैति. ब्रा. २/८/८/३ एवं निरु. ७ देखना चाहिए।)

इस प्रकार के जन से दूर जाना ही श्रेयस्कर होता है। उस मनुष्य के लिये घर नहीं होता है। उस मनुष्य का पोषण करने के लिये किसी भी अपरिचित मनुष्य की शरण में जाना चाहिए। जैसे -

'न स सखा यो न ददाति सख्यै स चा भुवे स च मानायषित्वः।
अपास्मात् प्रेयान् न तदोको अस्ति पृणन्तमन्यमरणं चिदिच्छेत्॥'

'केवलाघो भवति केवलादी' यह हि त्याग मूलक वैदिक संस्कृति का महामन्त्र है। इसी ही तत्त्व का वर्णन स्मृति ग्रन्थों में पर्याप्त प्राप्त होता है। इसी सन्दर्भ में अक्षरशः अनुवाद रूप से गीता का यह श्लोक देखना चाहिए -

'यज्ञाशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः।
भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्॥' (गीता. ३/१३)

2.7 संवाद सूक्त

ऋग्वेद में दार्शनिक सूक्तों की जैसी उपनिषदो में तात्त्विक विवेचनों के साथ सम्बद्ध है, वैसे ही इन सूक्तों का प्रबन्ध काव्य और नाटक के साथ भी सम्बन्ध जुड़ता है। इस प्रकार के सूक्तों में कथनोपकथन की प्रधानता है। ऋग्वेद में अनेक कथनोपकथन प्रधान यमयमी सूक्त-सरमापणि संवाद सूक्त-ऊर्वशीपुरुरवा संवाद सूक्त-आदि सूक्त है, जिनको आधार मानकर भारतीय नाटकों की उत्पति हुई। दृष्टान्त रूप से उर्वशी पुरुरवा संवादमूल को आधार बनाकर कालिदास ने विक्रमोर्वशीय नाम के त्रोटक की रचना की।

इस सन्दर्भ में भारतीय विद्वानों ने नाटको का उदय वेद में स्थित सूक्तमूल ही बताया है। किन्तु इस विषय में पाश्चात्य विद्वानों के मध्य गम्भीर मतभेद है। जर्मन विद्वान् डाक्टर श्रोदर महोदय ने भी इस विचार का समर्थन किया। उन्होंने ही संवाद सूक्तों को गीतरूप में स्वीकार किया। उस गान को नृत्य से प्रदर्शित किया जाता था, वे इन संवाद सूक्तों के धार्मिक नाटक के रूप में चाहते थे। और यह ही भारतीय नाटकों की मूल प्रवृत्ति कहलाती है।

डॉ. हर्टल महोदय ने भी श्रोदर महोदय के विचार का अनुमोदन किया। दूसरे विद्वान विण्डिश-ओल्डेनवर्ग-पिशेल आदि मुख्य मानते हैं कि संवाद सूक्त प्राचीन काल में गद्य पद्यात्मक थे। पद्यभाग अत्यधिक रोचकता के साथ आज भी प्राप्त होता है। गद्यभाग तो केवल वर्णन परक है, इस कारण यह भाग लगभग समाप्त जैसा हो गया है। नाटक में जो आज भी गद्य पद्य का मिश्रण देखते हैं। वह भी इस प्रकार संवाद सूक्त मूल का ही भाग है। ये विद्वान ऐतरेय ब्राह्मण में आये शुन:शेप उपाख्यान को, और शतपथ ब्राह्मण में आये उर्वशी-पुरुवा-उपाख्यान को, यहाँ पर साक्षि भाव के रूप में स्थापित करते है। और कुछ विद्वान रामलीला और कृष्णलीला का यहाँ पर निर्देश करते है। ऋग्वेद के ये सभी संवाद सूक्त नाटकीय ओजस्विता के साथ सम्पृक्त है। और कलात्मक दृष्टि से भी ये सूक्त नितान्त रमणीय, सरल और प्रभावित करने वाले हैं।

2.8 लौकिक सूक्त

ऋग्वेद के दसवें मण्डल के अनेक सूक्तों में लौकिक-व्यवहार-विषय का रोचक वर्णन है। ऋग्वेद के दसवें मण्डल में भी इस विधा से लौकिक संस्कृति के साथ सम्बद्ध विषयों की उपलब्धि इस मण्डल की विशिष्टता को सूचित करती है। यक्ष्मा बीमारी के विनाश के लिये १६१, १६३ तथा अन्य अनेक प्रकार के सूक्त प्राप्त होते है। रक्षा सूक्त में दानवों से गर्भ की रक्षा के लिए मन्त्र है। एक सूक्त में पत्नी के कष्ट को छोड़कर पति के प्राप्ति के उपाय का विवरण प्राप्त होता है। जैसे -

'इमां खनाम्योषधिं वीरुधं बलवत्तम्।
यया सपत्नीं बाधते संविन्दते पतिम्॥' **(ऋग्वे. १०/१४५/१)**

अन्ये सूक्त में शत्रु-संहार के लिये प्रार्थना की है -

'ऋषभं मां समानानां सपत्नानां विषासहितम्।
हन्तारं शत्रूणां कृधि विराजं गोपतिं गवाम्॥' **(ऋग्वे. १०/१६६)**

इस प्रकार से १०/१६४ सूक्त में बुरे स्वप्न के विनाश के लिये प्रार्थना की है। १०/५४ सूक्त का नाम ही 'मन का परिवर्तन' सूक्त है। वैवस्वत- यम ने दिन, भूमि, समुद्र आदि के पास जाकर लोगों के मन परिवर्त्तन के लिये प्रार्थन की है -

'यत् ते यमं वैवस्वतं मनो जगाम दूरकम्।
तत्त आवर्तयामसीह क्षयाय जीवसे॥' **(ऋग्वे. १०/५८)**

एक सूक्त में भिषग ऋषि ने औषधियों की भव्य स्तुति को सम्मुख रखा –

'याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पति-प्रसुतास्ता नो मुञ्चत्वं हसः॥' (ऋग्वे. १०/९७/१५)

एक सूक्त से ज्ञात होता है कि प्राचीन काल में भी प्रजा ही राजा को चुनती थी। जैसे –

'अभित्वा देवः सविताभि सोमो अवीवृतत्।
अभित्वा विश्वाभूतान्यभिवर्चो यथाससि॥'

2.9 दार्शनिक सूक्त

नासदीय सूक्त-(१०/१२९) पुरुष सूक्त-(१०/९०) हिरण्यगर्भ सूक्त-(१०/१२१) वाक् आदि सूक्त दार्शनिक दृष्टि से जैसे गम्भीर हैं वैसे ही प्रतिभा की अनुभूति दृष्टि से अत्यधिक रमणीय है, और अभिनव कल्पना दृष्टि से भी नितान्त प्रसिद्ध है। नासदीय सूक्त के विषय में आलोचकों का मत है कि, जो यह सूक्त ऋग्वेद के ऋषियों की अलौकिक चिन्तन धारा का मौलिक-परिचय देता है। जगत की प्रारम्भिक स्थिति का वर्णन करते हुए इस सूक्त के ऋषि कहते है – सृष्टि के आरम्भ काल में न सत् था और न ही असत् था। न दिन था और न ही रात थी, सृष्टि के अभिव्यञ्जना का कोई चिह्न तब नहीं था। सबसे पहले काम अर्थात् सङ्कल्प उत्पन्न हुआ। इसी काम की अभिव्यक्ति ही सृष्टि के विभिन्न स्तरों में उसका प्रतिफल हुआ। तब एक ही तत्त्व था, जो बिना वायु के श्वास ग्रहण करता था, तथा अपनी स्वाभाविक शक्ति से वह तत्व जीवित था।

'आनीदवातं स्वधया तदेकम्।
तस्माद्धान्यन्न परः किञ्च नास॥' (ऋ.१०/१२९/२)

प्रतिभा अनुभूति के ऊपर अद्वैत तत्त्व की प्रतिष्ठा इसी ही गम्भीर मन्त्र का गूढ़ रहस्य है।

पाठगत प्रश्न 2.7

1. दान स्तुति का उल्लेख कहाँ है?
2. भारतीय सिद्धान्तों की चाभी कौन है?
3. त्याग मूलक वैदिक संस्कृति का महामन्त्र क्या है?
4. नाटकों का उदय विद्वान किससे मानते हैं?
5. कुछ पाश्चात्य विद्वानों के नाम लिखो।
6. दार्शनिक दृष्टि से गम्भीर अर्थ के सूक्तों का नाम लिखो।

2.10 दसवें मण्डल की अर्वाचीनता

दसवां मण्डल सबसे अर्वाचीन मण्डल है। और इसका कारण वंश मण्डल से भाषा में आया भेद तथा विषय में आया भेद बहुत जगह दिखते है। यहाँ भाषा में आये वैशिष्ट्य को, छन्द में आये वैशिष्ट्य को और देवता में आये वैशिष्ट्य की आलोचना करते है।

2.10.1 भाषा में आया भेद

ऋक् संहिता साहित्य में बहुत जगह भाषा में भेद परिलक्षित होता है। ऋग्वेद के बहुत से स्थलों में शब्दों के भिन्न रूप से प्रयोग दिखते हैं। भाषा विद्वानों की यह मान्यता है की संस्कृत भाषा जैसे विकसित होती वैसे ही उसकी भाषा में रेफ के स्थान में लकार का प्रयोग बढ़ता गया है, जैसे जल वाचक के सलिल-शब्द का प्राचीन रूप सरिर ऐसा पद गोत्र मण्डलों में प्रयुक्त है। किन्तु दसवें मण्डल में लकार युक्त शब्द का ही प्रयोग प्राप्त होता है। यह प्रयोग दृष्टि से भाषा में भेद है। व्याकरण दृष्टि से भी भाषा में भिन्नता दिखाई देती है। प्राचीन काल में पुंल्लिङ्ग-आकारान्त शब्दों में प्रथमा द्विवचन का प्रत्यय आ इस प्रकार का है। जैसे "द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया" (ऋ. वे. १.१६१) इति। किन्तु दसवें मण्डल में उस स्थान में औ इस प्रत्यय का भी प्रयोग प्राप्त होता है। जैसे - "मा वामेतौ मा परेतौ रिषाम्" (ऋ.वे.१०.१७८.२), सूर्याचन्द्रमसौ धाता (१०.१९०.३)। प्राचीन अंश में क्रिया अर्थक क्रिया की सूचना के लिए तवै, से, असे, अध्यै, इत्यादि प्रत्ययों का प्रयोग होता है। किन्तु दसवें मण्डल में अधिकतया तुम् इति प्रत्यय का ही प्रयोग प्राप्त होता है। दसवें मण्डल में कर्त्त वै, जीव से, अवसे इत्यादि प्राचीन पदों के स्थान में कर्त्तुम्, जीवितुम्, अवितुम् इत्यादि पदों का प्रयोग अधिक दिखाई देता है। ब्राह्मण ग्रन्थों की भाषा के साथ दसवें मण्डल की भाषा समान दिखाई देती है। इस कारण इन ग्रन्थों के काल विचार करने पर प्राचीन प्रतीत नहीं होते हैं।

2.10.2 छन्द में आया हुआ वैशिष्ट्य

प्राचीन अंशो में उपलब्ध छन्दों की अपेक्षा से दसवें मण्डल के छन्दों में भेद है। प्राचीन काल में वर्णों की संख्या के ऊपर छन्द विन्यास में विशेष ध्यान था। किन्तु दसवें मण्डल में लघु-गुरू के ऊपर भी उचित विन्यास में भी सब जगह विशेष बल दिया। जिससे पद्यों के पढ़ने में सुस्वर का और लय का आविर्भाव अत्यधिक रुचिकर होता है। फलतः प्राचीन अनुष्टुप् दसवें मण्डल में लौकिक संस्कृत के अनुष्टुप् के समान हुआ।

2.10.3 देवता में आया वैशिष्ट्य

ऋग्वेद में ही देवता प्राणशाली होने से असुर ऐसा कहा। इस वेद में देवताओ के स्थान अत्यधिक महत्त्व पूर्ण है। वैदिक काल के महर्षियों ने प्रकृति की लीला धारण करने के लिये विविध रूपों की कल्पना की है। किन्तु दसवें मण्डले में उल्लिखित देवों में बहुत से नये देवता जोड़ दिये। वरुण समस्त जगत का नियन्ता, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान् देवस्वरूप से पूर्व चित्रित थे, किन्तु इस मण्डल

टिप्पणियाँ

में उसका शासन क्षेत्र कम होकर जलमात्र तक शेष दिखाई देता है। विश्व नियन्ता पद से हटकर जल देवता स्वरूप में ही दृष्टि गोचर होते है। कुछ मानसिक भावना से, और मानसिक वृत्ति के प्रतिनिधि स्वरूप नये देवों की कल्पना की है। इस प्रकार के देवो में 'श्रद्धा (ऋ. १०.१५१),' मन्यु (१०.८३.८४) आदि की कल्पना की है। ताक्ष्र्य की भी स्तुति एक स्थान में देवता रूप में ही उपलब्ध होती है (ऋ. १०.१७८)। कामायनी श्रद्धा का अत्यधिक रोचक वर्णन सूक्त में है -

श्रद्धयाग्निः समिध्यते श्रद्धया हूयते हविः।
श्रद्धां भगस्य मूर्धनि वचसा वेदयामसि॥

श्रद्धा से अग्नि प्रज्वलित होती है, अर्थात् ज्ञान अग्नि का प्रज्वलन श्रद्धा से ही होता है। हवि से हवन भी श्रद्धा से ही सम्भव होता है। गीता में भगवान श्री कृष्ण ने भी बहुत जगह इसी प्रकार कहा है। ऐश्वर्य का ऊर्ध्व स्थान को जाने के लिए हम वाणी द्वारा श्रद्धा से स्तुति करते है। गाय की स्तुति में प्रयुक्त एक सम्पूर्ण सूक्त (१०.१६९) वैदिक आर्यो की गो विषय में भावना को सुन्दरता से अभिव्यक्त किया है। अरण्य-देवों की स्तुति में (१०.१४६) विषय की नवीनता पण्डितों के हृदय को आकर्षित करती है। इसी सूक्त का प्रख्यात मन्त्र में (१०.७१.११) यज्ञ सम्पादक चारों ऋत्विजों का (होता - अध्वर्यु-उद्गाता - ब्रह्मा) स्पष्ट रूप से सङ्केत प्राप्त होता है।

पाठगत प्रश्न 2.8

1. वेद में सलिल शब्द के स्थान में किसका प्रयोग दिखाई देता है?
2. ऋग्वेद के दसवें मण्डल में किन प्रत्ययों का प्रयोग मिलता है?
3. जीवसे, अवसे इन स्थानों पर ऋग्वेद के दसवें मण्डल में क्या प्रयोग किया है?
4. पद्यों के पढ़ने में रुचिता कैसे आती है?
5. ऋग्वेद में देव कैसे असुर कहलाते है?
6. ऋग्वेद के दसवें मण्डल में वरुण देव कैसे प्रतिपादित है?
7. वरुण देव का शासन क्षेत्र कहाँ था?
8. "श्रद्धयाग्निः समिध्यते" यह मन्त्र सम्पूर्ण लिखिए।

पाठ का सार

ऋग्वेद अष्टक-अध्याय-सूक्त भेद से तथा मण्डल-अनुवाक-वर्ग भेद से विभक्त है। ऋग्वेद में त्रिष्टुप्-छन्द का प्रयोग अधिक दिखाई देता है। ऋग्वेद की शाकल-वाष्कल-आश्वलायन-

शांख्यायन-माण्डूकायन-नाम की पांच मुख्य शाखा है। आजकल ऋग्वेद की प्रचलित संहिता शाकल शाखा ही है। संवाद सूक्त में कुछ उपाख्यान प्राप्त होते हैं। उनमे ऐतरेय ब्राह्मण में आया हुआ शुनः शेप उपाख्यान, शतपथ ब्राह्मण में आया हुआ उर्वशी-पुरुरवा उपाख्यान इत्यादि मुख्य है। ऋग्वेद का दसवां मण्डल सबसे अर्वाचीन मण्डल है। और इसका कारण वंश मण्डल से भाषा में आया हुआ भेद, और विषय में आई हुई भिन्नता सब जगह दिखाई देती है। यहां भाषा में आये हुए वैशिष्ट्य को, छन्द में आये हुए वैशिष्ट्य को और देवता में आये हुए वैशिष्ट्य की आलोचना की है।

पाठांत प्रश्न

1. ऋक् संहिता के दो क्रमों का वर्णन कीजिए।
2. ऋग्वेद में ऋचाओं की संख्या के विषय में जो जानते हो उसे लिखिए।
3. ऋग्वेद की कौन-कौन सी शाखा प्रसिद्ध है, उनको विस्तारपूर्वक लिखिए।
4. संवाद सूक्त के विषय में संक्षेप में लिखिए।
5. दसवें मण्डल की अर्वाचीनता की युक्ति के द्वारा समर्थन कीजिए।
6. दसवें मण्डल में भाषा में आये हुए भेद का वर्णन कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

2.1

1. ऋच्यते स्तूयते यया सा ऋक्।
2. ऋचाओं का समूह ही ऋग्वेद है।
3. जहाँ अर्थवश से पाद की व्यवस्था हो वह ऋक् ऐसा मीमांसक मानते है।
4. ऋचा के उत्पन्न होने के विषय में पुरुष सूक्त में आलोचना की है।
5. महाभाष्य में ऋग्वेद की इक्कीस शाखा का निर्देश है।
6. ऋग्वेद सूक्त-मण्डल भेद से दो भागों में विभक्त है।
7. ऋषि सूक्त, देवता सूक्त, छन्द सूक्त और अर्थ सूक्त भेद से सूक्त चार प्रकार के हैं।
8. जिन मंत्रो के ऋषि एक ही हैं, उन मंत्र समूहों को ही ऋषि सूक्त कहते हैं।
9. जिन मंत्रों के छन्द समान ही है, उन मंत्र समूहों को ही छन्द सूक्त कहते हैं।
10. जितने अर्थ समाप्त मन्त्रों का समूह अर्थ सूक्त कहलाता है।

टिप्पणियाँ

11. ऋग्वेद मण्डल-अनुवाक-वर्ग भेद से और अष्टक अध्याय सूक्त भेद से दो प्रकार की है।
12. प्रथम भाग में बालखिल्य सूक्तों को छोड़कर सम्पूर्ण ऋग्वेद संहिता में दस मण्डल, पचासी अनुवाक, दो हजार छः वर्ग है।

2.2

1. ऋक् संहिता में आठ भाग हैं, और प्रत्येक भाग में आठ अध्याय हैं।
2. सम्पूर्ण ऋग्वेद में चौसठ अध्याय हैं।
3. प्रत्येक अध्याय के अन्तर विभाग का नाम – 'वर्ग' है।
4. अच्छी प्रकार से और सरलता से जैसा अध्ययन होता है, उसी प्रकार इनका वर्ग भेद किया है।
5. सम्पूर्ण ऋग्वेद में दो हजार छः वर्ग है।

2.3

1. ऋग्वेद का दूसरा मण्डल क्रम विभाग है।
2. बालखिल्य सूक्तों को छोड़कर सम्पूर्ण ऋग्वेद संहिता में दस मण्डल, पचासी अनुवाक और दो हजार छः वर्ग है।
3. शाकल्य के अनुसार दस हजार चार सौ सड़सठ मन्त्र है।
4. मन्त्रों में अक्षर संख्या है – ४३२०००।
5. सभी मन्त्र चौदह छन्दों में विभक्त हैं।
6. ऋग्वेद में आये मन्त्र द्रष्टा ऋषियों में गृत्समद-विश्वामित्र-वामदेव-अत्रि-भारद्वाज-वशिष्ठ आदि है।
7. खिल शब्द का अर्थ होता है 'परिशिष्ट' अथवा बाद में संकलित मन्त्र।
8. ऋचाओं में शब्दो की संख्या १५३८२३ है।
9. बृहती छन्द छत्तीस अक्षरों का होता है।

2.4

1. प्राचीन आचार्यो के मध्य में ऋक् मन्त्रों की गणना प्रसंग में विरोध, शाखाओं के भेद से ही परिलक्षित होता है।
2. इस भ्रमोदय का कारण है – ऋग्वेद में कितनी ऋचा इस प्रकार की है जो ऋचा अध्ययन काल में चार पाद वाली होती है किन्तु प्रयोग काल में दो पाद वाली ही मानते हैं।
3. चरणव्यूह के टीका कर्ता – महिमदास है।
4. ऋग्वेद की संहिता में 'त्रिष्टुप्' – छन्द का प्रयोग अधिक है।

5. त्रिष्टुप्-छन्द में चार पाद होते हैं, और ग्यारह अक्षर होते है।
6. गायत्री-छन्द में तीन पाद होते हैं, प्रतिपाद में आठ अक्षर होते है।
7. जगती-छन्द में चार पाद और ग्यारह अक्षर होते है।
8. शेषभाग में ८९८ अनुष्टुप् है।

2.5

1. यज्ञ की आवश्यकता को अनुभव करके उदात्त द्रष्टा महामुनि व्यास ने अपने चार शिष्यों को वेद पढ़ाया।
2. यज्ञ में चार ऋत्विज होते हैं, और वे हैं १. होता, २. अध्वर्यु, ३. उद्गाता, ४. और ब्रह्मा।
3. होता हि यज्ञ का आवाह्न कर्त्ता है।
4. अध्वर्यु विधिवत यज्ञ को पूर्ण करता है।
5. उद्गाता ही स्वर बद्ध मन्त्रों को गाता है।
6. जैमिनी को व्यास ने सामवेद पढ़ाया।
7. ब्रह्मा ही यज्ञ निरीक्षक और किये हुए और नहीं किये हुए कार्य का निरीक्षण कर्त्ता है।
8. यज्ञ निरीक्षण कार्य सम्पादन के लिये मुनि व्यास ने सुमन्तु मुनि को अथर्ववेद पढ़ाया।
9. शाखा के साथ 'चरण'-शब्द का भी सम्बन्ध है।
10. मालतीमाधव के टीका कर्ता - श्री जगधर है।
11. महाभाष्य में ऋग्वेद की इक्कीस शाखा का निर्देश है।

2.6

1. शाकल शाखा और वाष्कल शाखा।
2. कवीन्द्र आचार्य की सूची से।
3. आश्वलायन शाखा में।
4. समानी व आकूतिः इत्यादि मन्त्र है।
5. श्री सुक्त में।

2.7

1. कात्यायन की ऋक्सर्वानुक्रमणि में केवल बाईस संख्या सूक्तों में है।
2. शबर स्वामी ने शबर भाष्य को लिखा।
3. 'केवलाघो भवति केवलादी' इति
4. वेदों में वर्णित सूक्तों के द्वारा।

5. डॉ. हर्टल महोदय, श्रोदर महोदय, विण्डिश महोदय, ओल्डेन वर्ग महोदय, पिशेल महोदय इत्यादि

6. नासदीय सूक्त, पुरुष सूक्त, हिरण्यगर्भ सूक्त, वाक सूक्त इत्यादि।

2.8

1. सरिर इति।
2. तवै, से, असे, अध्यै, इत्यादि प्रत्यय है।
3. जीवितुम्, अवितुम् इति।
4. सुस्वर का तथा लय के सुन्दर होने से।
5. प्राणशालि होने से।
6. समस्त जगत का नियन्ता, सर्वज्ञ, और सर्वशक्तिमान् है।
7. जलमात्र ही।
8. श्रद्धयाग्नि: समिध्यते श्रद्धया हूयते हवि:। श्रद्धां भगस्य मूर्धनि वचसा वेदयामसि।

॥ दूसरा पाठ समाप्त॥